

नवजागरणकालीन हिंदी-उर्दू स्त्री उपन्यासों में स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता की अवधारणा: उषा देवी मित्रा एवं सुगरा हुमायूँ मिर्जा के विशेष संदर्भ में

फ़रज़ाना सैफ़ी

शोधार्थी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली-25

प्रस्तावना

भारतीय नवजागरण का काल सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस काल में जहाँ समाज के विभिन्न वर्गों में आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार और रूढ़ियों के विरोध की चेतना विकसित हुई, वहीं स्त्री की स्थिति को लेकर भी गंभीर प्रश्न उठाए गए। स्त्री शिक्षा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, पर्दा-प्रथा, विवाह संस्था, पारिवारिक मर्यादा तथा स्त्री की सामाजिक भूमिका जैसे प्रश्न साहित्य में विशेष रूप से अभिव्यक्त हुए। हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं के साहित्य में स्त्री लेखिकाओं ने इन प्रश्नों को केवल सामाजिक समस्या के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि स्त्री के अनुभव, संवेदना और आत्मचेतना से जोड़कर देखा। इस संदर्भ में उषा देवी मित्रा और सुगरा हुमायूँ मिर्जा का लेखन विशेष महत्व रखता है। दोनों लेखिकाएँ भिन्न भाषाई एवं सांस्कृतिक परिवेश से संबंधित होते हुए भी स्त्री के जीवन में शिक्षा और आत्मनिर्भरता के महत्व को रेखांकित करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में नवजागरणकालीन हिंदी-उर्दू स्त्री उपन्यासों के संदर्भ में स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। उषा देवी मित्रा और सुगरा हुमायूँ मिर्जा के उपन्यासों में स्त्री शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि उसके व्यक्तित्व-विकास, आत्मसम्मान, निर्णय क्षमता और सामाजिक चेतना से जुड़ी हुई है। इसी प्रकार आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है; इसमें मानसिक स्वतंत्रता, अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक रूढ़ियों के प्रति प्रश्नाकुल दृष्टि भी सम्मिलित है। दोनों लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री अपने समय की सामाजिक सीमाओं से संघर्ष करते हुए धीरे-धीरे अपनी पहचान और अधिकार के प्रति सजग होती दिखाई देती है। इस दृष्टि से उनका साहित्य नवजागरणकालीन स्त्री-चेतना के विकास को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।

बीज-शब्द : नवजागरण, स्त्री शिक्षा, आत्मनिर्भरता, स्त्री-चेतना, हिंदी साहित्य, उर्दू साहित्य, सामाजिक परिवर्तन।

भूमिका

भारतीय समाज में नवजागरण केवल राजनीतिक चेतना का परिणाम नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्विचार की एक व्यापक प्रक्रिया थी। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में भारतीय समाज अनेक प्रकार की रूढ़ियों और असमानताओं से जूझ रहा था। स्त्रियों की शिक्षा का अभाव, बाल-विवाह, विधवा जीवन, पर्दा-प्रथा, दहेज, पुरुष-प्रधान पारिवारिक व्यवस्था तथा स्त्री की सीमित सामाजिक भूमिका ऐसे प्रश्न थे, जिन पर समाज-सुधार आंदोलनों और साहित्य में व्यापक विमर्श हुआ। आधुनिक शिक्षा के प्रसार ने व्यक्ति और समाज दोनों

Published: 29 September 2026

DOI: <https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i9.45935>

Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

को अपने पारंपरिक विश्वासों की पुनर्समीक्षा करने का अवसर दिया। इस परिवर्तन का प्रभाव स्त्रियों के जीवन पर भी पड़ा।

नवजागरण के संदर्भ में स्त्री की स्थिति को एक समान मानना उचित नहीं होगा। सामाजिक वर्ग और आर्थिक स्थिति के आधार पर स्त्रियों के अनुभव अलग-अलग थे। सत्यप्रकाश मिलन के अनुसार, “पुनर्जागरण के दौर की स्त्रियों की स्थिति को उनकी सामाजिक हैसियत के अनुरूप अलग-अलग ढंग से प्रभावित किया। अभिजात्य और बुर्जुआ वर्ग की स्त्रियों के लिए नवजागरण का अर्थ वही नहीं था, जो साधनहीन, धनहीन स्त्रियों के लिए था।”¹ यह तथ्य स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता के प्रश्न को व्यापक सामाजिक संदर्भ में देखने की आवश्यकता को स्पष्ट करता है। स्त्री शिक्षा का प्रश्न इस सामाजिक परिवर्तन के केंद्र में था। लंबे समय तक स्त्री के लिए शिक्षा को अनावश्यक या पारिवारिक व्यवस्था के लिए चुनौती के रूप में देखा जाता रहा। सुधार-विरोधी मानसिकता को स्पष्ट करते हुए वीर भारत तलवार लिखते हैं, “सुधार-विरोधियों को स्त्री शिक्षा के खिलाफ कई आशंकाएँ थीं, पढ़ी-लिखी लड़कियाँ चरित्रहीन हो जाएँगी, घरेलू कामकाज की उपेक्षा करेंगी, पराए पुरुषों को चिट्ठी लिखने लगेंगी या पढ़-लिखकर मर्दों की बराबरी करने पर उतर आएँगी।”²

इसके विपरीत सुधारवादी दृष्टि शिक्षा को स्त्री के विकास का साधन मानती थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने शिक्षा के व्यापक स्वरूप को रेखांकित करते हुए लिखा, “शिक्षा बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना-लिखना भी उसी के अंतर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं, इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए। खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए।”³

इस प्रकार स्त्री शिक्षा केवल पढ़ने-लिखने की क्षमता नहीं थी, बल्कि वह सामाजिक चेतना और आत्मनिर्भरता की आधारभूमि बन रही थी।

नवजागरण और स्त्री शिक्षा का प्रश्न

नवजागरणकालीन सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। शिक्षा ने व्यक्ति को परंपरागत मान्यताओं पर प्रश्न करने की क्षमता प्रदान की। स्त्रियों के संदर्भ में यह परिवर्तन और भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि शिक्षा से उनका संबंध लंबे समय तक सीमित रहा था। स्त्री को घरेलू दायित्वों तक सीमित रखने वाली सामाजिक संरचना में औपचारिक शिक्षा का अवसर बहुत कम था। ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था और उसके साथ विकसित नए सामाजिक वर्गों ने स्त्री की भूमिका के संबंध में एक नए विमर्श को जन्म दिया। सत्यप्रकाश मिलन के अनुसार, “भारत में ब्रिटिश उपनिवेशिक शासन व्यवस्था ने एक नवीन सत्तात्मक व्यवस्था को जन्म दिया। इस व्यवस्था ने शिक्षा द्वारा नई स्त्री छवि का आदर्श सामने रखा।”⁴ इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री शिक्षा का प्रश्न केवल परिवार के भीतर का प्रश्न नहीं था, बल्कि वह व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन से जुड़ गया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों में स्त्री शिक्षा का समर्थन करने वाले सुधारकों की भूमिका महत्वपूर्ण थी, किंतु सुधारवादी प्रयासों में अंतर्विरोध भी मौजूद थे। वीर भारत तलवार इस स्थिति को रेखांकित करते हुए लिखते हैं, “उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलन में बहुत वर्गीय पुरुष सुधारकों का सबसे बड़ा अंतर्विरोध स्त्री-पुरुषों के बीच दोहरे मानदंडों के इस्तेमाल का था।”⁵ इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री शिक्षा का समर्थन करने के बावजूद अनेक सुधारक स्त्री की स्वतंत्रता को सीमित दायरे में ही स्वीकार करना चाहते थे। यही अंतर्विरोध साहित्य में स्त्री पात्रों के माध्यम से सामने आता है। स्त्री को शिक्षा तो दी जानी चाहिए, लेकिन वह शिक्षा उसकी पारंपरिक भूमिका को

चुनौती न दे यह मानसिकता लंबे समय तक बनी रही। इसी सामाजिक द्वंद्व के बीच उषा देवी मित्रा और सुगरा हुमायूँ मिर्जा के उपन्यास स्त्री शिक्षा के अधिक व्यापक अर्थ की ओर संकेत करते हैं।

उषा देवी मित्रा के उपन्यासों में स्त्री शिक्षा का प्रश्न

उषा देवी मित्रा के साहित्य में स्त्री शिक्षा का प्रश्न स्त्री के व्यापक व्यक्तित्व-विकास से संबंधित दिखाई देता है। उनके स्त्री पात्र सामाजिक व्यवस्था के भीतर रहते हुए अपने जीवन की परिस्थितियों को समझने और उनसे संघर्ष करने का प्रयास करते हैं। शिक्षा उनके लिए केवल ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि जीवन को समझने का माध्यम बनती है। *पिया* में नीलिमा का चरित्र अशिक्षा की स्थिति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से सामने लाता है। लेखिका लिखती हैं-“स्त्री-शिक्षा में पिता की रुचि अवश्य थी, किन्तु भाजी थे विरोधी। और इसलिए वह न तो घर पर पढ़ पाई, न स्कूल में।”⁶ इस कथन से स्पष्ट होता है कि स्त्री की शिक्षा का मार्ग केवल शैक्षिक संस्थाओं की उपलब्धता से नहीं, बल्कि परिवार की मानसिकता से भी निर्धारित होता था। नीलिमा की अशिक्षा उसके जीवन के अनुभवों को सीमित करती है। *पिया* में कहा गया है-“नीलिमा चुप रही, इन बातों का प्रतिवाद वह न कर सकी। कदाचित् जन्मगत संस्कार ने उसे प्रतिवाद करने से रोका हो या विद्याहीनता ने ही जानकारी का अभाव हो या माता की बात की सत्यता ही हो।”⁷ यहाँ विद्याहीनता को केवल अक्षर-ज्ञान की कमी नहीं, बल्कि प्रतिवाद करने की क्षमता के अभाव से जोड़ा गया है। इसी स्थिति को आगे और स्पष्ट करते हुए कहा गया है-“धार्मिक पुस्तक उसने पढ़ी न थी, अक्षर भी तो नहीं पहचानती थी, फिर पढ़ती कैसे? हाँ, तो पुस्तकों से उसे कोई संबंध नहीं था। जानती केवल इतना थी कि हिंदू विधवा को निर्जला एकादशी उपवास करना होता है।”⁸ इस उद्धरण में शिक्षा के अभाव और रूढ़ धार्मिक धारणाओं के बीच संबंध स्थापित होता है।

इसके विपरीत *पिया* में शिक्षा और सुधारवादी चेतना का स्वर भी मिलता है। बाल-विधवा विवाह के संदर्भ में कहा गया है, “बाल-विधवा का विवाह शास्त्र-संगत है। कौन कहता है कि नहीं है? यदि पहले ही दीदी को ब्याह देते तो ऐसा दिन आता ही क्यों?”⁹ यह कथन उस समय की रूढ़ धारणाओं के विरुद्ध तर्कपूर्ण दृष्टि का परिचायक है। उषा देवी मित्रा के यहाँ शिक्षा अंततः आत्मसम्मान से जुड़ती है। *पिया* में पिया का कथन है, “इन बातों को मैं नहीं समझती दीदी, मेरे तो विचार से सेल्फ रिस्पेक्ट नारी मात्र में रहना चाहिए, उसके बिना जो जीवन है वह तो पशु का जीवन है।”¹⁰ यहाँ आत्मसम्मान को स्त्री के मानवीय अस्तित्व का अनिवार्य आधार माना गया है।

शिक्षा से आत्मनिर्भरता की ओर

स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता के बीच गहरा संबंध है। शिक्षा स्त्री को ज्ञान देती है, लेकिन उसका वास्तविक महत्व तब सामने आता है जब वह ज्ञान उसके निर्णय और व्यवहार का हिस्सा बनता है। इसी कारण नवजागरणकालीन स्त्री लेखन में शिक्षा को आत्मनिर्भरता की पूर्वपीठिका के रूप में देखा जा सकता है। सुनंदा पराशर लिखती हैं-“स्त्रियाँ इस बात का महत्व भी समझने लगी थीं कि जब तक स्वयं आर्थिक रूप से स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होंगी, तब तक अधिकार प्राप्त नहीं होंगे।”¹¹ इस कथन से आर्थिक स्वतंत्रता और अधिकार-बोध के संबंध को समझा जा सकता है। उषा देवी मित्रा के *सोहिनी* उपन्यास में आत्मनिर्भर स्त्री का अधिक स्पष्ट रूप दिखाई देता है। सोहिनी स्थानीय कॉलेज में नौकरी के लिए आवेदन करती है और उसके संबंध में कहा गया है-“सोहिनी स्थानीय कॉलेज में वह नौकरी के लिए आवेदन कर चुकी है, स्वावलंबी होकर वह दुनिया में रहेगी, इससे अधिक उसे चाहिए भी क्या।”¹²

इसके बाद सोहिनी का शिक्षिका के रूप में स्थापित होना आत्मनिर्भरता की दिशा में उसके विकास को दर्शाता है-“सोहिनी छात्राओं को पढ़ा रही थी, अध्यापिकाओं में वह सर्वकनिष्ठ थी एवं नवांगंतुक थी। नौकरी करते उसे कुछ

महीने व्यतीत हुए होंगे, कॉलेज कंपाउंड में उसे क्वार्टर मिल गया था, एक बंगला प्रिंसिपल से कुछ हटकर।”¹³ इस प्रकार शिक्षा यहाँ रोजगार से जुड़ती है और रोजगार आर्थिक आत्मनिर्भरता का माध्यम बनता है।

पथचारी में भी स्त्रियों के श्रम और कौशल को सम्मानजनक जीवन से जोड़ा गया है। वहाँ स्त्रियों के विभिन्न घरेलू एवं हस्तशिल्प कार्यों का उल्लेख मिलता है-“मैंने देखा मिट्टी की उस बड़ी परछी में बहुत सी चक्की घड़ी हैं और वहाँ औरतें अनाज पीस रही हैं। दूसरी परछी में जाम, जेलो, मुरब्बे, अचार बना रही हैं, कमरों में दिया सिलाई, बीड़ी तो कहीं कुछ बन रहे हैं, कहीं पर चरखे भी काते जा रहे हैं, दरी और गमछे भी तो स्त्रियाँ ही बना रही हैं।”¹⁴ यहाँ स्त्री-श्रम को उत्पादन और आर्थिक उपयोगिता के संदर्भ में देखा गया है। इसी उपन्यास में आत्मनिर्भरता की अवधारणा को अत्यंत व्यापक रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा गया है-“आत्मरक्षा केवल लाठी चलाने से ही नहीं होती। बेकारी का यह युग है। इस युग में पहला प्रश्न उठता है सम्मान के साथ आत्मरक्षा करने का, सम्मान के साथ जीवित रहने का। यदि पेट की रोटी का सम्मान के साथ उपार्जन न कर सके तो आत्मरक्षा का प्रश्न ही झूठा पड़ जाता है।”¹⁵ इस दृष्टि में आत्मरक्षा का अर्थ आर्थिक आत्मनिर्भरता से जुड़ जाता है।

सुगरा हुमायूँ मिर्जा के उपन्यासों में स्त्री शिक्षा महत्व

सुगरा हुमायूँ मिर्जा के उपन्यासों में स्त्री शिक्षा मुस्लिम सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के भीतर विकसित होती दिखाई देती है। *मुशीरुन्निसवाँ* में ज़हरा के माध्यम से आधुनिक शिक्षा और पश्चिमी ज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया गया है। कहा गया है-“इस तरह ज़हरा को यह कुदरती मौक़ा मिला है कि वह मगरिबी तहज़ीब और उलूम से भी अपना दिमाग़ रोशन करे।”¹⁶

यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर-ज्ञान नहीं, बल्कि मानसिक क्षितिज का विस्तार है। ज़हरा के लिए यूरोपीय महिला से शिक्षा प्राप्त करना भी ज्ञान के नए अवसर के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी क्रम में भूगोल की शिक्षा के संबंध में कहा गया है-“जुग़राफ़िया की सिर्फ़ मर्दों ही को ज़रूरत नहीं है, बल्कि औरतों को भी है; क्योंकि अगर वह मर्दों के साथ न भी जाएँ, तो भी ख़िता-ए-किताब का तअल्लुक रहता है। ज़हरा बेटी, तुम ज़रूर जुग़राफ़िया पढ़ो, बड़े काम का और दिलचस्प मज़मून है।”¹⁷ इस प्रकार स्त्री की शिक्षा को पुरुषों के समान बौद्धिक अधिकार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिक्षा का अगला चरण विचार व्यक्त करने की क्षमता है। *मुशीरुन्निसवाँ* में स्पष्ट कहा गया है, “मेरी राय में तो अपने खयालात और राय का इज़हार न कर सकना औरतों के लिए बड़ी मुश्किल और तकलीफ़ की बात है।”¹⁸ यह कथन शिक्षा को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास से जोड़ता है।

स्त्री शिक्षा और सामाजिक चेतना

सुगरा हुमायूँ मिर्जा के साहित्य में स्त्री शिक्षा व्यक्तिगत विकास के साथ सामाजिक सुधार से भी जुड़ती है। *सरगुजश्त-ए-हाज़रा* में स्त्रियों की शिक्षा और उनके सामूहिक प्रयास की आवश्यकता का स्वर मिलता है। कहा गया है-“नहीं, अब वो ज़माना नहीं है कि अब लड़कियों को भी तालीम दी जाती है। मैं चाहती हूँ हम सब मिलकर एक दरख्वास्त लिखकर अपना खयाल ज़ाहिर करके सरकार-ए-आलिया फ़रमाँरवाए भोपाल की ख़िदमत में पेश करें।”¹⁹

यहाँ स्त्री शिक्षा व्यक्तिगत आकांक्षा से आगे बढ़कर सामूहिक सामाजिक कार्यक्रम का रूप लेती है। स्त्रियाँ स्वयं अपने लिए संस्थागत व्यवस्था की माँग करती हैं। यह नवजागरणकालीन स्त्री चेतना के विकास का महत्वपूर्ण संकेत है। इसी प्रकार *मोहिनी* में गरीब स्त्रियों को हुनर सिखाने के लिए विद्यालय स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की गई है-“मेरा खयाल है कि यहाँ गरीब औरतों को सनातन व हिरफ़त सिखाने के लिए स्कूल क़ायम करूँ, लेकिन इस काम की निगरानी करने वाला कोई माक़ूल आदमी हो तो बहुत अच्छा है।”²⁰ यहाँ शिक्षा को सीधे रोजगार और आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया है।

मुशीरुन्निस्वाँ में भी स्त्रियों के हुनर और आर्थिक क्षमता को रेखांकित किया गया है-“जो औरतें कोई हुनर या काम जानती हैं, वो भी दौलत पैदा करने की क्राबिलियत रखती हैं और उनको यह इत्मीनान होता है कि वो हर हालत में जायज वसाइल से मआश हासिल कर सकेंगी और इज्जत से ज़िंदगी बसर कर सकेंगी।”²¹ स्त्री की आर्थिक क्षमता को उसकी गरिमापूर्ण जीवन-यात्रा से जोड़ता है।

स्त्री श्रम और आत्मनिर्भरता

सुगरा हुमायूँ मिर्जा स्त्रियों के घरेलू कौशल को आर्थिक उत्पादन में बदलने की संभावनाओं को भी सामने लाती हैं। *मुशीरुन्निस्वाँ* में एक गरीब सैयदानी का उदाहरण दिया गया है, जो पति की मृत्यु के बाद कारचोब के काम से अपनी आजीविका चलाती है।-“एक गरीब सैयदानी रहती है, उनका बेटा छोटा सा है। जब उनके खाविंद का इंतिकाल हो गया, उनके मियाँ को फ़ौज से कुछ पेंशन मिलती थी, वो बंद हो गई। लेकिन बीबी सैयदानी को कारचोब का काम आता था, उन्होंने उम्दा-उम्दा वाज़े की चीज़ें बना-बना कर फ़रोख़्त करनी शुरू कीं, फिर तो बाज़ कारख़ानादारों के यहाँ से उनको बराबर काम मिलने लगा।”²²

यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि स्त्री के कौशल को यदि अवसर मिले तो वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकती है। इसी विचार को व्यापक सामाजिक संदर्भ में रखते हुए लेखिका कहती हैं,-“हिंद की औरतों में भी काम करने की पूरी कुव्वत है, लेकिन उसको सिखाया नहीं जाता और इस तरह तवज्जो नहीं की जाती कि वो बेचरियाँ अपने दिमाग़ और हाथ की कुव्वत को पूरी तौर पर काम में लाने के क्राबिल बना सकें।”²³ इस प्रकार समस्या स्त्रियों में क्षमता के अभाव की नहीं, बल्कि अवसर और प्रशिक्षण के अभाव की है।

हिंदी-उर्दू स्त्री लेखन में आत्मनिर्भरता की समान चेतना

उषा देवी मित्रा और सुगरा हुमायूँ मिर्जा की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों लेखिकाएँ स्त्री शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन से जोड़ती हैं। दोनों के साहित्य में स्त्री के जीवन की समस्याओं को व्यक्तिगत कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना के परिणाम के रूप में देखने की प्रवृत्ति मिलती है। उषा देवी मित्रा के यहाँ *सोहिनी* जैसी स्त्री शिक्षा प्राप्त कर नौकरी के माध्यम से आत्मनिर्भर बनती है, जबकि *पथचारी* में स्त्री के श्रम और कौशल को आर्थिक सम्मान से जोड़ा जाता है। दूसरी ओर सुगरा हुमायूँ मिर्जा के यहाँ ज़हरा की शिक्षा, गरीब स्त्रियों के लिए प्रशिक्षण संस्थान की कल्पना तथा सैयदानी के आर्थिक संघर्ष के उदाहरण आत्मनिर्भरता के विभिन्न रूप प्रस्तुत करते हैं।

दोनों लेखिकाओं के साहित्य में आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल घर से बाहर निकलना नहीं है। इसके अंतर्गत आर्थिक क्षमता के साथ आत्मसम्मान, निर्णय क्षमता, विचार-अभिव्यक्ति और सामाजिक चेतना भी आती है। यही कारण है कि *मुशीरुन्निस्वाँ* में स्त्री के विचार व्यक्त करने की क्षमता को महत्व दिया गया है, जबकि *पिया* में आत्मसम्मान को स्त्री के जीवन का अनिवार्य आधार माना गया है।

स्त्री शिक्षा, वर्ग और सामाजिक असमानता

स्त्री शिक्षा के प्रश्न को वर्गीय संदर्भ से अलग करके देखना उचित नहीं होगा। नवजागरण की शिक्षा का लाभ सभी स्त्रियों को समान रूप से प्राप्त नहीं हुआ। एक ओर उच्च एवं मध्यवर्गीय स्त्रियों के लिए शिक्षा के नए अवसर उपलब्ध हुए, वहीं दूसरी ओर गरीब स्त्रियों के लिए शिक्षा का अर्थ प्रायः कौशल-प्रशिक्षण और आजीविका का साधन भी था। सुगरा हुमायूँ मिर्जा का *मोहिनी* में गरीब स्त्रियों के लिए उद्योग एवं हुनर-शिक्षा का विचार इसी वर्गीय अंतर को स्पष्ट करता है। उषा देवी मित्रा के *पथचारी* में भी स्त्रियों द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्पादन कार्यों का उल्लेख आर्थिक

आत्मनिर्भरता की इसी दिशा को व्यक्त करता है। इस संदर्भ में B. R. Ambedkar का कथन श्रम-विभाजन के सामाजिक स्वरूप को समझने में उपयोगी है- “This division of labour is not spontaneous; it is not based on natural aptitudes.”²⁴ स्त्रियों के संदर्भ में भी यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि उनके कार्यों और क्षमताओं का निर्धारण प्राकृतिक योग्यता से अधिक सामाजिक व्यवस्था द्वारा किया गया। दोनों लेखिकाएँ अपने साहित्य में इसी निर्धारित सीमाओं को प्रश्नांकित करती दिखाई देती हैं।

शिक्षा, आत्मसम्मान और स्त्री-चेतना

स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता का अंतिम लक्ष्य केवल बाहरी सुविधा नहीं, बल्कि स्त्री-चेतना का विकास है। जब स्त्री अपने अधिकारों, दायित्वों और सामाजिक स्थिति के प्रति जागरूक होती है, तब वह अपने जीवन को नए दृष्टिकोण से देखना शुरू करती है। उषा देवी मित्रा के साहित्य में नीलिमा की अशिक्षा और सोहिनी की शिक्षा के बीच का अंतर इसी परिवर्तन को सामने लाता है। नीलिमा अक्षर-ज्ञान के अभाव में रूढ़ियों और पारिवारिक निर्णयों के प्रति प्रतिरोध नहीं कर पाती, जबकि सोहिनी शिक्षा और रोजगार के माध्यम से अपने जीवन को स्वावलंबी रूप में स्थापित करती है। सुगरा हुमायूँ मिर्जा के यहाँ भी ज़हरा का ज्ञान, स्त्री की विचार-अभिव्यक्ति और गरीब स्त्रियों को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता एक विकसित सामाजिक चेतना की ओर संकेत करती है। इस प्रकार दोनों लेखिकाओं के साहित्य में एक क्रम निर्मित होता है—शिक्षा से ज्ञान, ज्ञान से चेतना, चेतना से आत्मसम्मान और आत्मसम्मान से आत्मनिर्भरता।

निष्कर्ष

नवजागरणकालीन हिंदी-उर्दू स्त्री उपन्यासों में स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता केवल व्यक्तिगत विकास के प्रश्न नहीं हैं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन के संकेतक हैं। उषा देवी मित्रा और सुगरा हुमायूँ मिर्जा ने अपने-अपने सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में स्त्री के जीवन को केंद्र में रखकर शिक्षा, परिवार, विवाह, सामाजिक रूढ़ियों, श्रम, आत्मसम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे प्रश्नों को अभिव्यक्ति दी। उषा देवी मित्रा के साहित्य में अशिक्षा स्त्री के व्यक्तित्व को सीमित करने वाली शक्ति के रूप में सामने आती है, जबकि शिक्षा उसे आत्मचेतना और आत्मसम्मान की ओर ले जाती है। *पिया* की नीलिमा और *सोहिनी* का तुलनात्मक अध्ययन इस परिवर्तन को स्पष्ट करता है। *पथचारी* में स्त्री श्रम और आत्मरक्षा की अवधारणा आर्थिक आत्मनिर्भरता के व्यापक अर्थ को सामने लाती है।

दूसरी ओर सुगरा हुमायूँ मिर्जा के साहित्य में मुस्लिम सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के भीतर स्त्री शिक्षा का प्रश्न उठाया गया है। *मुशीरुन्निसवाँ* में ज़हरा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान और विषयगत शिक्षा का समर्थन मिलता है। स्त्री को अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार देने की माँग उसके बौद्धिक विकास और आत्मसम्मान की ओर संकेत करती है। *मोहिनी* में गरीब स्त्रियों को हुनर एवं शिल्प सिखाने की कल्पना तथा *सरगुजिशत-ए-हाज़रा* में सामूहिक रूप से स्त्री शिक्षा के लिए प्रयास करने की इच्छा सामाजिक चेतना के विकसित रूप को सामने लाती है। दोनों लेखिकाओं की दृष्टि में शिक्षा स्त्री को केवल पढ़ना-लिखना नहीं सिखाती, बल्कि उसे जीवन को समझने की दृष्टि देती है। यही दृष्टि उसे सामाजिक रूढ़ियों पर विचार करने, अपने निर्णय लेने और अपने आत्मसम्मान की रक्षा करने की क्षमता प्रदान करती है। इस अर्थ में शिक्षा आत्मनिर्भरता की आधारभूमि है।

अतः कहा जा सकता है कि उषा देवी मित्रा और सुगरा हुमायूँ मिर्जा के साहित्य में स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता की अवधारणा नवजागरणकालीन सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। भाषाई और सांस्कृतिक भिन्नताओं के बावजूद दोनों लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री की शिक्षा, गरिमा, विचार-अभिव्यक्ति और आर्थिक क्षमता का प्रश्न साझा चिंता का विषय बनकर उभरता है। उनकी स्त्रियाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष करते हुए

अपने लिए अधिक सम्मानजनक और स्वायत्त जीवन की संभावनाएँ तलाशती हैं। यही उनके साहित्य को नवजागरणकालीन स्त्री-चेतना के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाता है।

संदर्भ-सूची

1. *हिंदी की महिला साहित्यकार*, सत्यप्रकाश मिलिंद (सं.), पृष्ठ-14
2. *रस्साकसी*, वीर भारत तलवार, पृष्ठ-188
3. *सामाजिक क्रांति के दस्तावेज: भारतीय नवजागरण के अग्रदूतों के लेखन और भाषण से एक चयन*, शम्भुनाथ (सं) पृष्ठ-215
4. *हिंदी की महिला साहित्यकार*, सत्यप्रकाश मिलिंद (सं.), पृष्ठ-12
5. *रस्साकसी*, वीर भारत तलवार, पृष्ठ-187
6. *पिया*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-5
7. *पिया*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-29
8. *पिया*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-29
9. *पिया*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-39
10. *पिया*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-120
11. *हिंदी नवजागरण और स्त्री अस्मिता*, सुनंदा पराशर, पृष्ठ-103
12. *सोहिनी*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-51
13. *सोहिनी*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-66
14. *पथचारी*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-50
15. *पथचारी*, उषा देवी मित्रा, पृष्ठ-51
16. *मुशीरुन्निस्वाँ*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-16
17. *मुशीरुन्निस्वाँ*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-20
18. *मुशीरुन्निस्वाँ*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-43
19. *सरगुजिश्त-ए-हाजरा*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-53
20. *मोहिनी*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-71
21. *मुशीरुन्निस्वाँ*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-127-128
22. *मुशीरुन्निस्वाँ*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-128
23. *मुशीरुन्निस्वाँ*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, पृष्ठ-128

24. *Annihilation of Caste: With a Reply to Mahatma Gandhi*, बी. आर. आंबेडकर, पृष्ठ-22

संदर्भ-ग्रंथ

1. *हिंदी की महिला साहित्यकार*, सत्यप्रकाश मिलिंद (सं.), अनन्य प्रकाशन, 2018
2. *रस्साकसी*, वीर भारत तलवार, वाणी प्रकाशन, 2017
3. *सामाजिक क्रांति के दस्तावेज: भारतीय नवजागरण के अग्रदूतों के लेखन और भाषण से एक चयन*, संपादक: शंभूनाथ, वाणी प्रकाशन, 2017
4. *हिंदी नवजागरण और स्त्री अस्मिता*, सुनंदा पराशर, अनन्या प्रकाशन, 2021
5. *पिया*, उषा देवी मित्रा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1937
6. *सोहिनी*, उषा देवी मित्रा, सामयिक साहित्य सदन, चेम्बरलेन रोड, लाहौर, प्रकाशन-वर्ष अनुपलब्ध
7. *पथचारी*, उषा देवी मित्रा, मानस मंदिर, जबलपुर, द्वितीय संस्करण, 1949
8. *मुशीरुन्निस्वाँ*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, राजिकुल खैरी, संपादक : इस्मत, दिल्ली, 1931
9. *मोहिनी*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा, राजिकुल खैरी, संपादक: इस्मत, दिल्ली, 1929
10. *सरगुजिश्त-ए-हाजरा*, सुगरा हुमायूँ मिर्जा इस्मत ऑफिस, दिल्ली, राजिकुल खैरी एजेंसी, 1930
11. *Annihilation of Caste: With a Reply to Mahatma Gandhi*, third Edi., बी. आर. आंबेडकर, 1944